दैनिक पीपुल्स समाचार, भोपाल
12 FEB 2014

संपादकीय

किसानों ने बढ़ाया मान

प्रदेश को लगातार दूसरी बार कृषि कर्मण पुरस्कार मिला है। इस मामले मुख्यमंत्री ने एकदम सही कहा है कि बधाई के पात्र किसान हैं, जिनके जमीन पर गिरे पसीने से प्रदेश का गौरव बढ़ा है।

हमारा मध्य प्रदेश तमाम मामलों में पिछड़ा माना जाता रहा है। ऐसे इक्का दुक्का क्षेत्र ही हैं जिनमें हम गौरव से सर उठा कह सकें कि इस क्षेत्र में हम पूरे देश भर से आगे हैं। कृषि के मामले में भी हम पहले पिछड़े ही रहे। देश में सबसे ज्यादा अन्न उत्पादन के मामले में सबसे बड़ा प्रदेश उत्तर प्रदेश और पंजाब ही दशकों तक आगे रहे हैं, लेकिन पिछले कुछ सालों में हमारे प्रदेश में कृषि मामले में काफी सुधार हुआ है। स्थिति यह तक हुई है कि पिछले साल भी देश में सबसे ज्यादा अन्न उपजाने के लिए हमें कृषि कर्मण पुरस्कार मिला और इस साल भी हमें यह पुरस्कार हासिल हुआ है। हमारी कृषि विकास दर भी लगातार बढ़ रही है। प्रदेश ने वर्ष 2011-12 के 230 लाख टन की तुलना में 2012-13 में 277.8 लाख टन अनाज का उत्पादन किया है। दलहन और धान के उत्पादन के मामले में भी सर्वाधिक बढ़त दर्ज की है। 2012-13 में प्रदेश ने कुल अन्न उत्पादन में जो 16.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है, वह देश में सबसे ज्यादा है। इसी उपलब्धि के लिए प्रदेश को राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के हाथों पुरस्कार मिला है। यह सम्मान वास्तव में उन किसानों का सम्मान है, जिन्होंने खेतों में पसीना बहाया है। सरकार इस पर गर्वित है, पर उसे किसानों की समस्याओं की ओर भी ध्यान देना चाहिए। हालांकि मुख्यमंत्री ने पुरस्कार ग्रहण करते हुए तुरंत इसका श्रेय किसानों को दिया और कहा कि खेती को लाभ का धंधा बनाने के लगातार प्रयासों और किसानों की मेहनत के साझा परिणाम स्वरूप मध्य प्रदेश लगातार दूसरी बार कृषि कर्मण पुरस्कार जीतने में सफल रहा, जिसके लिए किसान बधाई के पात्र हैं। पर मुख्यमंत्री के इतने कह देने भर से बात बनती नहीं है। किसानों की समस्याएं तो दूर इससे होंगी नहीं, वह तो उन्हीं हालात में रहेंगे।

उन्हीं हालात से यहां तात्पर्य यह है कि अगर समुचित कदम नहीं उठाए गए, किसानों के हित के कदम नहीं उठाए गए और उन्हें समुचित सुविधाएं नहीं प्रदान की गईं तो किसान हर साल कर्ज लेकर खेती करते रहेंगे। फसल अच्छी हो गई तो ठीक, नहीं तो कर्ज में डूबते रहेंगे और जो इसमें ज्यादा ही डूब जाएंगे वह आत्महत्या जैसा कदम उठाने को विवश होते रहेंगे। इसलिए सरकार को चाहिए की गौरव के साथ हर साल कृषि कर्मण पुरस्कार तो ग्रहण करे ही पर खेती को लाभ का धंधा बनाने के उपाय भी करे। किसानों को गांव में सही बीज और खाद समय पर मिल सकें। उनकी फसल पकते ही तुरंत उचित दामों पर बिक भी सके। साथ ही सरकार यह भी कोशिश अवश्य करे कि जिस अनाज की वह खरीदी करती है उनका उचित भंडारण हो सके, ताकि खुले में अनाज खराब ना हो, बारिश में भीग कर बरबाद ना हो और गोदामों में उसे चूहे नहीं खा जाएं। तभी किसान का भला होगा, प्रदेश का भला होगा और सरकार को भी गर्वित होने का मौका मिलेगा।